उपसंहार

उपसंहार

''रामदरश मिश्र के काव्य में प्रतिबिंबित युगीन जीवन'' ('रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ' तथा 'बाजार को निकले हैं लोग' के विशेष संदर्भ में) के अध्ययन के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए उनका निचोड़ यहाँ सार रूप में प्रस्तुत है -

डॉ. रामदरश मिश्र जी का अनोखा व्यक्तित्व है। उनका चेहरा सदैव हँसमुख रहता हैं। अहं से दूर होने के कारण ही उन तक पहुँचना सामान्य से सामान्य व्यक्ति के लिए सहज संभव है। उनके सहज जीवन में भरपूर शक्ति और गति हैं। 82 बरस पार करने पर भी वे युवा है क्योंकि उनके जीने में एक प्रेरक शक्ति है। उनके जितने मित्र हैं उतने उपेक्षा करनेवाले भी हैं। उपेक्षा करनेवालों की ओर वे कभी ध्यान नहीं देते।

मिश्र जी मूलत: कवि है। उनमें साहित्य के बीज बहुत बचपन में मौजूद थे। उनके लेखन का क्रम काव्य, कहानी, उपन्यास तथा साहित्य की अन्य विधा ऐसा रहा हैं। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में लेखनी चलाई है। उनकी रचनाओं में परिवेश के प्रति गहरा लगाव है। देहाती तथा महानगरीय जीवन, दोनों को समान रूप से जीने के कारण उनकी रचनाओं में आम आदमी की पुकार सुनाई देती है। वे साहित्य में सहजता के पक्षधर हैं। साहित्य ऐसा होना चाहिए जिन्हें सामान्य से सामान्य आदमी समझ सके। इस सहजता के कारण ही उन्हें कड़ी आलोचना सहनी पड़ी है। लेकिन उनके साहित्य के सही गवाह पाठक ही हैं। उन्होंने साहित्य में परिवेशगत अनुभवों को चित्रित किया है। आज के मूल्य विघटन के युग में भी वे शाश्वत मानव-मूल्यों के प्रति जुड़े रहे हैं। साहित्य में उनकी दृष्टि सदैव प्रगतिशील रही है। उम्र के साथ ही उनके लेखन में भी प्रौढ़ता आयी है। वे जीवन को अपने ढंग से जीते हैं। अत: स्पष्ट है कि वे एक महान रचनाकार हैं। आज हिंदी साहित्य क्षेत्र में डॉ. रामदरश मिश्र जी नाम महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

'रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ' तथा 'बाजार को निकले हैं लोग' इन दो काव्य-संग्रहों के संक्षिप्त विवेचन के बाद निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि दोनों रचनाओं में से प्रथम रचना चुनिंदा कविताओं का संकलन है। ये कविताएँ एक अलग दस्तावेजी महत्त्व रखती है। इनमें से कई गीत, गज़ल है तो बाकी कविताएँ हैं। इनमें से कई कविताएँ बहुत छोटी तो कई 'लम्बी कविताएँ' हैं। यह कविताएँ युगीन जीवन का यथार्थ चित्रित करने में सफल हुई है। मिश्र जी का प्रथम काव्य-संग्रह 'पथ के गीत' से लेकर बारहवाँ काव्य-संग्रह 'ऐसे में जब कभी' (1999) तक काव्य-संग्रहों की कविताएँ

इस काव्य-संकलन में संकलित है। इससे मिश्र जी की काव्य-प्रतिभा का विकास दिखाई देता है। मिश्र जी ने हिंदी साहित्य क्षेत्र में काव्य-विधा के रूप में कदम रखा। वे पहले गीत लिखते थें। उनके ज्यादातर गीत प्रकृति तथा प्रेम संबंधी मिलते हैं। गीतों में समय का यथार्थ समाहित न होने के कारण वे कविता की ओर मुड़े। उन्होंने अनेक छोटी तथा लंबी कविताएँ लिखीं है। उनकी लंबी कविताओं में राजनीतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक खोखलेपन तथा व्यवस्था दोषों का चित्रण मिलता है। लंबी कविताओं में 'लौट आया हूँ मेरे देश', 'साक्षात्कार', 'फिर वही लोग' आदि महत्त्वपूर्ण कविताएँ हैं। उनकी छोटी-छोटी कविताएँ अनेक युगीन समस्याओं को चित्रित करती हैं।

रामदरश मिश्र जी के प्रतिनिधि काव्य-संकलन में ऐसी कविताओं का संकलन हैं जिनमें विविधांगी कविताओं का तथा समाज-जीवन के विविध पार्श्व का चित्रण हुआ है। उन्होंने सिर्फ विविध सामाजिक समस्याओं का ही चित्रण नहीं किया तो प्रकृति के विविध रूप तथा प्रेम की विविध दशाओं का भी चित्रण किया है। विभिन्न प्रतिकों के माध्यम से वर्तमान समस्याओं को समझाने में उन्हें सफलता मिली है। डॉ. रघुवीर चौधरी जी ने चुनिंदा कविताओं के इस संकलन में अनेकविध विषयों की कविताओं का संकलन करने का प्रयास श्रेष्ठ साबित हुआ है। अत: उनका प्रयास सराहनीय रहा है।

'बाजार को निकले हैं लोग' इस गज़ल-संग्रह के रूप में मिश्र जी का गज़ल क्षेत्र में प्रथम प्रयास रहा है। इस संग्रह में बहुत महत्त्वपूर्ण गज़लें संग्रहित हैं। यह गज़लें इतनी रसपूर्ण हैं कि बार-बार पढ़ने को वह बाध्य करती हैं। दुष्यंतकुमार, कुँअर बेचैन जैसे महत्त्वपूर्ण गज़लकारों की तरह मिश्र जी भी सफल गज़लकार रहे हैं। उनकी छोटी-छोटी गज़लें बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें से कई गज़लें प्रकृति संबंधी, कई प्रेम संबंधी, कई उनके जीवनसंबंधी तो कई महत्त्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं संबंधी हैं। उनके प्रकृति संबंधी गज़लों में प्रकृति के कई रूप दिखाई देते हैं तथा प्रेमसंबंधी गज़लों में विविध अवस्थाओं का चित्रण परिलक्षित होता है। उनके जीवन-संबंधी गज़लों में उनके जीवन में आये उतार-चढ़ाव, सुख-दुख तथा साहित्यिक जीवन-यात्रा के दरमियाँन साहित्यकारों द्वारा हुए अन्याय का चित्रण भी दृष्टिगोचर होता है। सामाजिक समस्याओं में अकेलापन, भ्रष्टाचार, गरीबी, जातियता, न्याय-व्यवस्था, शोषण, अफसरशाही आदि समस्याओं का चित्रण प्राप्त होता है। इसके साथ ही इनमें कई संदेशात्मक गज़लें भी हैं।

मिश्र जी की गज़लों में प्रचलित अरबी, फारसी तथा उर्दू शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। गज़लसंबंधी प्रचलित नियमों का पालन करने का प्रयास मिश्र जी ने

किया है। वे अपने विषय से भटकते नहीं हैं। इस प्रकार मिश्र जी की दोनों रचनाओं में समकालीन युगीन जीवन-यथार्थ का चित्रण परिलक्षित होता है। मिश्र जी की समग्र कविताएँ युगजीवन की दृष्टि से देखा जाए तो उनमें प्रातिनिधिक रूप में युग जीवन उभरकर सामने आया है।

कवि 'रामदरश मिश्र जी के काव्य में चित्रित युगीन जीवन' के अध्ययन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि स्वतंत्रता के पश्चात देश की परिवर्तित स्थिति का उनके काव्य पर पर्याप्त मात्रा में प्रभाव रहा है। शिक्षा क्षेत्र में प्रगति, वैज्ञानिक उन्नति तथा औद्योगिककरण के कारण देश की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों में पर्याप्त मात्रा में परिवर्तन आया हैं। इन सभी परिवर्तित परिस्थितियों को मिश्र जी ने सूक्ष्मता से यथार्थ रूप में अपने काव्य में अंकित किया है। उन्होंने सामाजिक पक्ष के अंतर्गत स्वतंत्रता के कारण व्यक्ति में अधिकारों के प्रति आयी सज़गता, व्यक्ति स्वातंत्र्य की चेतना, गुलामी के प्रति विद्रोह, समाज में पनपनेवाली सामंती मानसिकता, झूठी शान-शौकत, असंघटितता के कारण समाज की होनेवाली हानी, शोषण, प्रकृति-चित्रण के माध्यम से प्रकृति में आया बदलाव, लोगों का मातृभूमि के प्रति प्रेम, कृषि जीवन, प्रेम की विभिन्न दशाएँ आदि बातों को कवि ने सूक्ष्मता से चित्रित किया हैं। इन सभी बातों से वे अपने काव्य के माध्यम से परिवर्तन लाना चाहते हैं।

रामदरश मिश्र जी ने अपने काव्य में राजनीतिक पक्ष का भी सशक्त रूप से चित्रण किया है। उनके काव्य में स्वातंत्र्योत्तर काल में भारतीय राजनीति में आये बदलाव, देश में चुनाव की स्थिति, भ्रष्ट राजनीतिज्ञ, राजनीतिक विद्रुपताएँ तथा साहित्यिक राजनीति आदि बातों का सूक्ष्मता से चित्रण मिलता हैं। वर्तमान राजनीति देश के लिए हानीकारक है। मिश्र जी अपने काव्य के माध्यम से वर्तमान राजनीति से सर्तक रहने का संदेश देते है। यहाँ स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक विकृत चेहरे का पर्दाफाश करने में मिश्र जी पूर्ण रूप से सफल हुए हैं।

धार्मिक तथा सांस्कृतिक पक्ष के अंतर्गत कवि ने वर्तमान धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों पर गहरा प्रकाश डाला है। इसके अंतर्गत धर्म के नये मानदंड के प्रति आस्था, धार्मिकता प्रगति में बाधा, सांप्रदायिकता, नई सभ्यता और संस्कृति का उदय तथा पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित भारतीय संस्कृति आदि बातों का यथार्थ चित्रण मिलता है। उनके काव्य से यह ज्ञात होता है कि उन्हें धर्म में भेदा-भेद मान्य नहीं है। वे

समाज में मानव धर्म की स्थापना करना चाहते हैं। उनके काव्य से और एक बात स्पष्ट होती है कि - मिश्र जी भारतीय संस्कृति के आदर्श तत्त्वों में विश्वास रखते हैं। धार्मिक विद्वेष फैलानेवालों के प्रति वे अपने काव्य के द्वारा अक्रोश व्यक्त करते हैं। इस प्रकार उनके काव्य में युगानुरूप धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण मिलता है।

आर्थिक पक्ष देश की सभी परिस्थितियों को प्रभावित करनेवाला पक्ष है। मिश्र जी के काव्य से स्पष्ट होता है कि आज भी अर्थ के धरातल पर आदमी का मूल्यांकन किया जाता है। मजदूरों का यथार्थ जीवन, अर्थ केंद्रित जिंदगी, अर्थ प्राप्ति के लिए अवैध मार्ग का स्वीकार, मानवीय मूल्यों में बिखराव, रिश्ते-संबंधों में दरार, नौकरी की तलाश, देश स्वावलंबन की आस आदि बातों का यथार्थ चित्रण मिश्र जी के काव्य में परिलक्षित होता हैं। उनके काव्य से यह भी स्पष्ट होती है कि उनका मानवीय मूल्यों में विश्वास है। मानवी मूल्य आज भी आम आदमियों में विद्यमान हैं। अत: स्वातंत्र्योत्तर बदलती आर्थिक स्थिति का भी यथार्थ चित्रण मिश्र जी के काव्य में प्राप्त होता है। संक्षेप में रामदरश मिश्र जी के काव्य में स्वातंत्रोत्तर भारतीय परिवेश पूर्ण रूप से उभरकर सामने आता है। इस प्रकार युगीन जीवन चित्रण में मिश्र जी को पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

रामदरश मिश्र जी के 'विवेच्य काव्य में युगजीवन की समस्याएँ एवं समाधान' के अध्ययन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि स्वातंत्र्योत्तर काल की बदलती सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति में आए उतार-चढ़ाव के कारण मानव जीवन में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई। स्वातंत्र्योत्तर काल में वैज्ञानिक विकास तथा औद्योगिकरण के कारण शहरों में जनसंख्या का केंद्रीकरण हुआ। परिणामत: लोगों को मिलनेवाली सुविधाओं का अभाव महसूस होने लगा। पर्याय रूप में कई कृत्रिम चीजों का निर्माण हुआ, लेकिन उसके कई घातक परिणाम जनता के सामने आए हैं। इन परिणामों के साथ-साथ समाज-जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार जैसी महाभयंकर समस्या उत्पन्न हुई है। इस समस्या ने और भी अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। जिसके कारण गरीब-अमीरों के बीच का अंतर और बढ़ता गया है। आम जनता अनेक समस्याओं से जूझती रही है। वर्तमान युग में प्रमुख रूप से शोषण की समस्या, भय की समस्या, बेरोजगारी तथा गरीबी की समस्या, महानगरों में बढ़ती जनसंख्या की समस्या, व्यसनाधीनता की समस्या, असंघटितता तथा दिशाहीनता की समस्या, सुख खोजने की समस्या, रिश्तों में दरार की समस्या, लापरवाही की समस्या, कृत्रिम जीवन तथा घुटन की

समस्या, राजनीतिक समस्या, खोखली देशभक्ति की समस्या, साहित्यिक समस्या, न्याय-व्यवस्था की समस्या, धार्मिक समस्या, किसान जीवन की समस्या, पर्यावरण की समस्या और प्रेमी-युगलों की समस्या आदि अनेक समस्याओं का चित्रण मिश्र जी के काव्यों तथा गज़लों में मिलता है। इसके साथ ही चापलुसी, समाज में व्याप्त बुराई, संस्कारहीनता तथा अकेलापन आदि कई समस्याएँ मिश्र जी के विवेच्य काव्य में विद्यमान रही हैं। इन सभी समस्याओं का यथार्थ चित्रण मिश्र जी के काव्य में पर्याप्त मात्रा में मिलता है। बदलते युग की बदलती समस्याएँ रोकने में सरकार भी असफल हुई है। जिससे वर्तमान जीवन की समस्याएँ अधिकाधिक जटिल होती जा रही है। उनकी कई काव्य-पंक्तियों में बदलती परिस्थितियों पर अंशिक रूप से समाधान देने का प्रयास हुआ है। इसमें आत्मबल की प्रमुखता और परिस्थितियों के प्रति सावधान रहना जरूरी है।

अंतत: कहना होगा कि मिश्र जी को विवेच्य काव्य तथा गज़लों में 'युगीन जीवन' की समस्याओं का चित्रण करने में पर्याप्त सफलता मिली है। कवि अपनी कविता तथा गज़लों में सिर्फ समस्याओं का रोना-धोना ही प्रस्तुत किया बल्कि अधिक तर समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया है।

रामदरश मिश्र जी के विवेच्य दोनों काव्य-संग्रहों का कलात्मक अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि मिश्र जी का काव्य कलात्मक दृष्टि से एक अलग महत्त्व रखता है। उनके काव्य में गीत, ग़ज़ल, लंबी कविता, लघु कविता, मुक्त काव्य आदि काव्य प्रकारों के प्रयोग परिलक्षित हुए हैं। संप्रेषणीयता तथा संक्षिप्तता उनके काव्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है।

मिश्र जी के विवेच्य दोनों काव्य-संग्रहों में से एक ग़ज़ल संग्रह तो दूसरा प्रतिनिधि काव्य-संग्रह है। उनकी ग़ज़लें कलात्मकता की दृष्टि से उर्दू ग़ज़लों के निकट पहुँचती हैं। उनकी गज़लों में उर्दू जैसे रदीफ, काफिया, मतला आदि का सफल प्रयोग मिलता है। उनकी गज़लों में मकते में, तखल्लूस का प्रयोग नहीं मिलता। शेष अन्य गज़लों में ग़ज़ल संबंधी नियमों का पालन किया गया है। इसके साथ ही मिश्र जी के विवेच्य दोनों काव्य-संग्रहों में काव्य-भाषा का सफल निर्वाह हुआ है। उनकी काव्य भाषा में दुरूहता न होने के कारण सामान्य-से-सामान्य पाठक भी उसे आसानी से समझ सकता है। उनके काव्य में अरबी, फारसी, अँग्रेजी, संस्कृत, भोजपुरी तथा अन्य भाषा के भी शब्द मिलते हैं। अरबी-फारसी के अधिकतर शब्द उनकी ग़ज़लों में मिलते हैं। उनकी काव्य भाषा में कई अरबी-फारसी शब्द घुलमिल गये हैं।

उनके काव्य में विभिन्न रसों का भी परिपाक हुआ है। इसमें से श्रृंगार, करूण, रौद्र, बीभत्स, वीर आदि रस प्रमुख रूप से पाए गए हैं। उन्होंने करूण रस के अंतर्गत देश की दुर्दशा का चित्रण किया है, तो श्रृंगार के अंतर्गत प्रेम के विभिन्न दशाओं का चित्रण प्राप्त होता है। मिश्र जी के काव्य में विभिन्न रसों के साथ अलंकारों का भी प्रयोग मिलता है। उन्होंने काव्य में अनुप्रास, उपमा, अन्योक्ति, पुनरुक्ति प्रकाश, मानवीकरण, अतिशयोक्ति आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। मिश्र जी के अलंकार काव्य की शोभा बढ़ाने में सहाय्यक सिद्ध हुये हैं। इसका उनके काव्य की संप्रेषणीयता में कोई फर्क नहीं पड़ता। वे सहज भाव से काव्य में आए हैं।

इसके साथ ही मिश्र जी के काव्य में प्रतीक तथा बिंबों का भी प्रयोग मिलता है। उनके काव्य में प्रतीक तथा बिंब अनुभव जगत के होने से वे जनजीवन से आधिक जुड़े हैं। उनके काव्य में अधिकतर बिंब प्रतीक बन जाते हैं। साथ ही उनके काव्य में विभिन्न प्रतीकों का सफल प्रयोग मिलता है। जैसे - प्राकृतिक, परंपरागत, उर्दू-फारसी काव्य के तथा कलात्मक प्रतीक आदि। इनमें से प्राकृतिक तथा कलात्मक प्रतीक अधिक रूप में पाये जाते हैं। बिंब निर्माण के अंतर्गत उन्होंने बौद्धिक रूप से बोझील तथा दार्शनिक बिंबों का निर्माण कम मात्रा में किया है। क्योंकि वे जानते हैं कि ऐसे बिंब समझने के लिए पाठकों में गहन अध्ययन तथा प्रतिभा की जरूरत होती है। उनके काव्य में विभिन्न बिंबों का सहजता से प्रयोग मिलता है। अत: प्राकृतिक तथा राजनीतिक बिंबों के साथ ही शब्द बिंब, वर्ण बिंब, समानुभूतिक बिंब, व्यंजना प्रवण-सामासिक बिंब, प्रसृत बिंब तथा ऐंद्रिय बिंब भी मिलते हैं। इसके साथ ही बिंबों का सफल निर्वाह हुआ है। इन कलात्मक विशेषताओं के बावजूद भी उनके काव्य में और भी कई कलात्मक विशेषताएँ पायी जाती हैं। इसमें गेयता, भावप्रवणता, यथार्थता, संक्षिप्तता, व्यंग्यप्रधानता आदि प्रमुख कलात्मक विशेषताएँ भी परिलक्षित होती हैं। निष्कर्षत: मिश्र जी का विवेच्य काव्य कलात्मकता की दृष्टि से सफल तो है ही साथ-साथ युगीन जीवन को प्रस्तुत करने में भी सहाय्यक सिद्ध होता है।

❑ प्रस्तुत शोध-कार्य की उपलब्धियाँ -

1. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के माध्यम से कवि का बहुमुखी व्यक्तित्व तथा कृतित्व आम आदमी में प्रेरणा जगाने का कार्य करता है। विवेच्य विषय के अध्ययन की यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

BABASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

2. विवेच्य काव्य के माध्यम से देहात से शहर में बसे आदमी के मन की पीड़ा का चित्रण हुआ है। प्रस्तुत चित्रण निश्चित रूप से शहरी आदमी को अपनी गाँव की याद दिलाता है। इससे फिर उनका अपनी जन्मभूमि से रिश्ता जुड़ सकता है। यह विवेच्य विषय के अध्ययन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
3. विवेच्य काव्य के माध्यम देश की स्वातंत्र्योत्तर काल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का यथार्थ ज्ञान हमें होता है। विवेच्य विषय के अध्ययन की यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
4. विवेच्य काव्य में चित्रित समस्याओं के माध्यम से ग्रामीण तथा शहरी जीवन के विविध क्षेत्र की समस्याओं का हमें बोध होता है अगर इस समस्याओं से हम सही समय पर सावधान हुए तो भविष्य में होनेवाली हानी टल सकती है। यह विवेच्य विषय के अध्ययन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
5. विवेच्य काव्य में कलात्मकता तथा संप्रेषणीयता का सफल संयोग विवेच्य विषय के अध्ययन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

❑ अध्ययन की नई दिशाएँ -

रामदरश मिश्र के काव्य साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. ''रामदरश मिश्र के काव्य में चित्रित मानवतावाद''
2. ''रामदरश मिश्र के काव्य का कथ्य एवं शिल्प अनुशीलन''
3. ''रामदरश मिश्र के काव्य में चित्रित व्यंग्य-बोध''
4. ''रामदरश मिश्र के काव्य में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन''

अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त विषय मेरे सामने उभर कर आये हैं। उपर्युक्त विषयों पर भी स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है। वस्तुत: हर विषय की अपनी सीमा होती है। यहाँ मेरे अपने शोध-विषय की भी सीमा है। आशा है, कल आनेवाले शोधकर्ता इन विषयों में स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य संपन्न करेंगे।

❑❑❑❑